ISBN - 978-81-933035-

Dr. AMBEDKAR COLLEGE OF LAW

प्रज्ञा करुणा

बहुजन हिताय । बहुजन सुखाय ।

PEOPLE'S EDUCATION SOCIETY (MUMBAI)

On The Occasion of Golden Jubilee Celebration of Dr. Ambedkar College of L
Nagsenvan, Aurangabad

Women, Law and Society

VALUME - 1

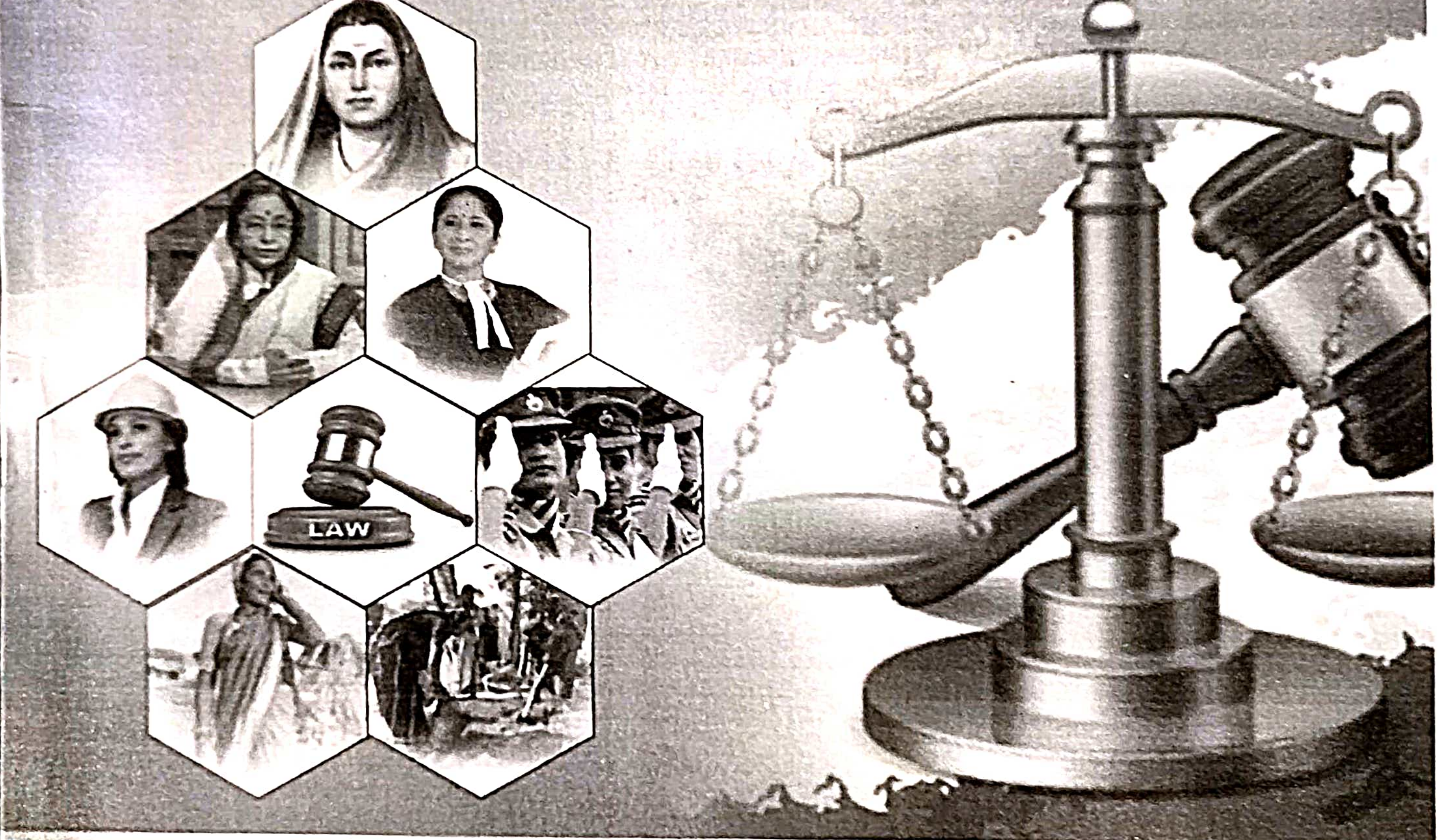

Editor
Dr. N. N. Behera
Principal Incharge
Dr. Ambedkar College of Law
Nagsenvan, Auragabad (M.S.)

37.

मानवाधिकार एवं महिलाएँ

कोमल लक्ष्मण पाचांगे

संशोधिका, इतिहास विभाग, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विद्यापीठ, औरंगाबाद

विभिन्न देशों के अधिकार पत्रों में स्त्री-पुरूषों के लिए समान अधिकार की बात कही गई है, संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 'मानवीय अधिकारों का सार्वलौकिक घोषणा पत्र' स्वीकार किए हुए भी ५५ वर्ष से अधिक समय व्यतीत हो चुका है, लेकिन आज तक भी महिला वर्ग के हित और अधिकर सुरक्षित नहीं है। भारत मुस्लिम देशों और अन्य विकासशील देशों में तो महिला वर्ग के लिए यातनाएं आये दिन की बात है ही। इंग्लैण्ड, अमेरिका और यूरोप के अन्य देशों में भी आज तक भी महिला वर्ग पुरूष वर्ग के हाथों अत्याचार भुगत रहा है।

हिंदू परिवारों में माता का उच्च्य स्थान था। माता गर्भधारणा कर पहले बच्चे का निर्माण करती है, और जन्म लेने के बाद पालन-पोषण करती है। अच्छे-बुरे का ज्ञान सिखाती है एवं उत्तम शिक्षा के द्वारा उसके भविष्य की निर्मात्री बनती है। पिता परिवार का प्रमुख होता या एवं कुटुंब को पालने की व्यवस्था करता था। प्राचीन काल में गुरू शिष्यों को शिक्षा प्रदान करते समय यह सिखाता था कि माता-पिता की देवता की तरह पूजा करो। जिस देश की स्त्रियाँ शक्ति एवं अपनी संस्कृति की प्रतीक थी, उनकी अस्मिता खतरे में आ गयी थी। मुगलों की सत्ता की समाप्ति के साथ ही अंग्रेजो की संस्कृति हमारी सभ्यता एवं संस्कृति को कमजोर करने लगी। इस समय स्त्री सारे अधिकारों से वंचित हो चुकी थी एवं मात्र भोग्या बनकर रह गयी थी। इस समय भारतीय समाज सुधारकों ने स्त्रियों की दशा सुधारने के लिये अनेक प्रयास किये। सतीप्रथा, बालविवाह एवं उनके निवारण के लिये कानून बनाये गये।[1] इस समय स्त्रियों ने घरों में ही चोरी छिपे, सही-गलत तरीके से, जैसे भी हो सकता था, धार्मिक कृत्य, व्रत-उपवास, पूजा-पाठ करती रही। समय-समय पर धर्म रक्षार्थ उन्होंने अपने प्राण भी दे दिये। स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय समाज में स्त्रियों के प्रति व्यापक बदलाव आया है। पहले जिस भारतीय समाज में कन्या का जन्म एक अभिशाप माना जाता था, उसे मार दिया जाता था, उसे उचित खान-पान एवं शिक्षा प्राप्त नहीं होती थी। अब माँ-बाप की अवधारणाओं में भी व्यापक परिवर्तन आया। लडकियाँ माँ-बाप के प्रति ज्यादा संवेदनशील होती है। अतः माँ-बाप का लड़कियों के प्रति स्नेह बढ़ गया। बालविवाह पर रोक लगी। विधवाओं को पुनर्विवाह करने की मान्यता प्राप्त हुई। अनेक कानूनी संरक्षण भी प्राप्त हुए।[2]

भारत में आधुनिक युग में कुछ स्त्री संगठनों ने स्त्रियों में चेतना जागृत करने और उनकी स्थिती में सुधार लाने की दृष्टी से प्रयत्न किए है। बीसवी शताब्दी के प्रारंभ से ही स्त्रि को समाज में उचित स्थान दिलाने हेतु स्त्री आंदोलन का सू हुआ। सर्वप्रथम चेन्नई में 'भारतीय महिला संघ' का गठन गया। इसके पश्चात विभिन्न महिला संगठनों के प्रयत्नों से दे अखिल भारतीय महिला सम्मेलन की स्थापना की गई १९२७ ई. में पुणे में इसका प्रथम अधिवेशन संपन्न हुआ। संगठन ने स्त्री शिक्षा के प्रसार के लिए विशेष प्रयत्न किए। संगठन ने आगे चलकर बालविवाह, बहुपत्नी प्रथा और प्रथा आदि का विरोध किया। इतने स्त्रियों के लिए पुरूष समान संपत्ति अधिकारों की मांग की रखी इस संगठन अलावा "विश्वविद्यालय महिला संघ" भारतीय ईसाई मण्डल, अखिल भारतीय स्त्री शिक्षा संस्था एवं कस्तूरबा स्मारक ट्रस्ट आदि संगठनों ने स्त्रियों की नियोग्यताओं को करने सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने और स्त्री शिक्षा प्रसार करने की दृष्टी से कार्य किया।[3] विश्वव्यापी स्तर पर स्त्रियों की स्थिति में सुधार के लिए कुछ प्रयत्न किए ग संयुक्त राष्ट्र की आर्थिक और सामाजिक परिषद के अ महिलाओं को स्थिति संबंध आयोग स्थापित किया गया है।

समाजसुधारकों और स्त्री संगठनों के प्रयत्न परिणामस्वरूप स्त्रियों की स्थिती में सुधार के लिए भारत में अभिनियम पारित हुए है। स्वतंत्र भारत के संविधान में पुरूष को समान अधिकर प्रदान किए गए है। इसके अति सन १९५५ ई. में हिंदू विवाह अधिनियम पारित कर विव क्षेत्र में स्त्रियां को पुरूषो के समान अधिकार दिए गए। परिस्थितियों में विवाह-विच्छेद की व्यवस्था की गई बहुपत्नी विवाह पर प्रतिबंध लगा दिया गया। सन १९५६ में उत्तराधिकार अधिनियम हिंदू नाबालिग और संरक्षता अधि हिंदू दत्तक ग्रहण और भरणपोषण अधिनियम, स्त्रियां कन्याओं का अनैतिक व्यापार निरोधक अधिनियम तथा १९६० ई. में दहेज निरोधक अधिनियम पारित किए गए।[4] आम भारतीय नारी यह भी नहीं जानती कि उसको कौन-कौन अधिकर प्राप्त है? और महिलाएं अपने अधिकारों को जान और समय पड़ने पर उनकी सहायता प्राप्त कर सके। इसके उनको कानूनी अधिकारों की जानकारी होना परम आवश्यक कानून द्वारा महिलाओं को क्या-क्या अधिकर प्राप्त है, इ संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत की जा रही है। कामकाजी महि के अधिकार, वैवाहिक अधिकार, धार्मिक अधिकार, साम अधिकार, कानूनी अधिकार, संपत्ति संबंधी अधिकार पारि

Impact Factor - 6.261

ISSN - 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

October - 2018

SPECIAL ISSUE- 67

RELIGION, CULTURE AND LITERATURE

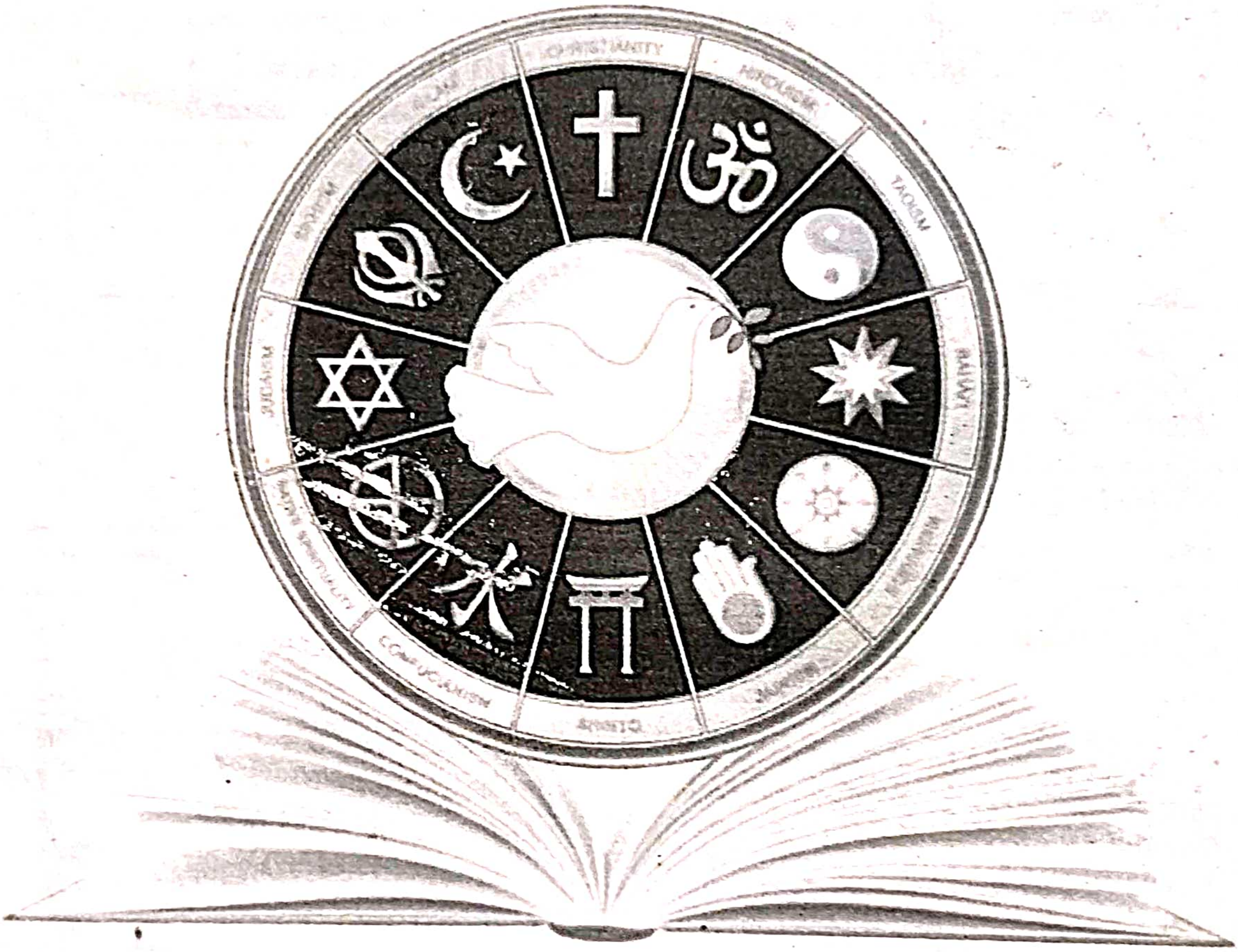

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editor of This Issue -
Prof. Diensh Jaronde
Head, Dept. of Psycology,
Indira Mahavidyalaya, Kalamb,
Dist. Yawatmal [M.S.] INDIA

This Journal is indexed in :
- UGC Approved Journal
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)
- Indian Citation Index (ICI)
- Dictionary of Research Journal Index (DRJI)

SWATIDHAN PUBLICATIONS

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF)-6.261(2017),
UGC Approved Journal Special Issue 67 : Religion, Culture & Literature
ISSN : 2348-7143
October. 2018

Dhammachakra Pravartan Din & Dharma Morality

Pachange Komal Laxman
Researcher
History Department,
Dr. Baabasaheb Ambedkar marathawatha university, Aurangabad

Dr. Babasaheb Ambedker took Dhammadeeksh and converted himself to Buddhism on 14 October 1956 at Nagpur and revived the Buddhist religion got a new momentum. Buddhism is not confined to any community, country region, or any communal natiory it is universal and super nationalism Buddhism is unique, mainly owing to its rationality, practicability, efficacy and universality. It is the noblest of all the unifying influences, asserts Nerada there who is of the view that it is the only lever that can uplift the world.[1] To the Buddhist there is no far and near no enemy and foreigner; no renegade or untouchable since universal love, realized through, has established the brotherhood of all living beings[2] A Buddhist is a citizen of the world.

All merciful Buddha is no more with us but the sublime Dharma which the great teacher unreservedly bequeathed to humanity exists in its pristine purity. Although the master has tuft no written records of his Teachings, His distinguished disciples preserved them by verbatim committing to memory and further transmitting them orally from generation to generation venerable Amanda there, the favourite attendant of the Buddha, who had the special privilege of hearing all the discourses, is stated to have recited the Dharma had nothing to do with God and soul, his Dharma and nothing to do with life offer death and concern with rituals and ceremonies the centre of his Dharma is man and the relation of man to man, in his life on earth. His second postulate was that the world is full of suffering and the only purpose of Dharma is to remove his suffering from the world. To purity meat of righteousness and the path of virtue. The path of purity meant "not to in jure or kill, not to steal or appropriate one – self anything which belongs to another not to speak untruth not to indulge in drinks"[4] Dr. Ambedkar summed up the essence of Buddha's Dharma as purity of mind, purity of speech for the Buddha, reaching perfection and Nirvana was the aim of the Dharma It was another name of righteous life, it was nothing but noble eight felt path. The Buddha praised the spirit of contentment and simple life, but did not glorify poverty at the same time he condemned the rich men "who never give but still amass and insisted upon the control of greed and craving. Buddhism also emphasised the impermanence of everything " there is the impermanence of composite things there is the impermanence of the individual being there is the impermanence of the self nature of conditioned things[5] the Buddha propounded the gospel of Dharma.

The purpose of religion is to make the world a kingdom of righteousness He tale people that to remove their misery each one must learn to be righteous in their conduct in relation to others and thereby make the earth the kingdom of righteousness. "He did not tell people that their aim inky heaven. Their kingdom of righteousness lies on earth and is to be reached by man by righteous conduct"[6] [to] Buddha, mom's miseries the result of man's inequity to man. No castle. On inequality, on superiority, on inferiority, all are equal this is what he stood for "Identify yourself with others. As they, so I do, As I, so they so said Buddha"[7] Dr. Ambedkar pointed out that the Buddha's view on re birth was in cons once with science [8] as to the secret of householders, happiness, the Buddha said. "The household which is possessed of wealth, justly and righteously acquired, amassed by the strength of the arm and earned by sweat, would enjoy happiness.[9] According to Dr. Ambedkar the sermons of Lord Buddha on Dharma, reveal of the

ij.index

ISSN 2277 - 7539 (Print)
Impact Factor - 5.631 (SJIF)

Excel's International Journal of Social Science & Humanities

An International Peer Reviewed Journal

January - 2020
Vol. I No. 13

EXCEL PUBLICATION HOUSE
AURANGABAD

आंबेडकरोत्तर आंबेडकरी चळवळीतील नियतकालिक : अस्मितादर्श

पाचांगे कोमल लक्ष्मण

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी आपल्या जीवनामध्ये समाज, लोकशाही,व्यक्तिविकास, स्वातंत्र्य, समता, बधुत्व या तत्वांना महत्त्व दिले आणि हेच विचार त्याच्या चळवळीचे केंद्र होते ' अस्मितादर्श' या नियतकालिकाने डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचा विचार हाच अस्मितादर्शचा विचार हाच अस्मितादर्शचा विचार मानला व समाजासमोर या माध्यमाव्दारे देण्याचा प्रामाणिक प्रयत्न केलेला आपणास दिसून येतो. अस्मितादर्शचा या नियतकालिकाचा कणा लोकशाहीवर असलेली निष्ठा हेच आंबेडकरवादाचे सूत्र आहे. व अस्मितादर्शचे सुध्दा तेच सूत्र आहे. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी समता व लोकशाही यावर निष्ठा राखली आहे. लोकांनी लोकांकडून चालविलेले लोकांचे सरकार म्हणजे लोकशाही सरकार पण डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर म्हणतात लोकांच्या सामाजिक व राजकीय जीवनात रक्ताचा एकही थेंब न गळता क्रांतिकारक बदल घडवून आणणे म्हणजे लोकशाहीया संदर्भातील आशय अस्मितादर्शमधून येतो. फुले आंबेडकरी चळवळ आणि तत्वज्ञानाच्या दोहनातून डॉ. पानतावणे यांनी अधिक समृध्द आणि व्यापक केले आहे. दलित शूद्रातिशूद्रांनी ' शिक्षण ' घेण्याची प्रेरणा फुले ,शाहू, आंबेडकरांमुळे मिळाली अभावग्रस्त तरूणाई लिहू वाचू लागली. पण त्यांना त्याच्या हक्कांचे विचारपीठ नव्हते. त्यांनी लिहिलेलं छापणार कोण ? यावर चिंतन मंथन करून आंबेकरी पत्रकारितेचा वारसा आत्मसात करून पानतावणे सरांनी सर्व प्रागतिक सर्जनशील तरूण, कवी, कथाकार समीक्षक, नाटककार, संशोधकांसाठी अस्मितादर्श हे वाङमयीन नियतकालिक सुरू केले.

इ.स.१९६७ मध्ये अस्मिता नावाचे नियतकालिक औरंगाबाद येथून सुरु करण्यात आले. ' अस्मित 'च्या पहिल्या अंकात महाराष्ट्रातील आज उद्याचा सांस्कृतिक संघर्ष आणि वाङमयीन समस्या या परिसंवादात डॉ. म.ना. वानखेडे, प्रा. वा. ल. कुळकर्णी, प्रा. रा. ग. जाधव, प्रा. मे. पु. रेगे , प्राचार्य म. भि. चिटणीस यांनी आपले विचार प्रकट केले होते.

अस्मिता नियतकालिकाच्या रूपाने एक विचारपीठ मिळाले. अस्मिताचे पहिले संपादक डॉ. म.ना. वानखेडे होते. पुढे अस्मिता चे नामांतर ' अस्मितादर्श ' मध्ये झाले. अस्मितादर्श च्या जडणघडणीमध्ये डॉ. गंगाधर पानतावणे या विशेष योगदान आहे. डॉ. पानतावणे यांनी अग्निदिव्यातून चालवलेल्या ' अस्मितादर्शचा जन्म इ.स. १९६८ साली झालेला आहे. नियतकालिके मोठी सामाजिक शक्ती असून समाजमनावर आपल्या विचारांचे संस्कार हळूहळू पण ठामपणे रूजविण्याचे कार्य नियतकालिके करीत असतात. हे कार्य अस्मितादर्शने केले आहे.मराठीतले पहिले नियतकालिक बाळशास्त्री जांभेकर यांनी काढलेले दर्पण इ.स. १९३२ होय. तर दलित नियतकालिकातील शिवराम, जानबा कांबळे यांचे ' सोमवंशीय मित्र ' इ.स. १९०८ हे होय. पुष्कळ दलित नियकालिके सुरू झाली पण बंद पडली, तरी या नियतकालिकांचा प्रबोधनाचा हेतू नाकारण्यासारखा नाही असे डॉ. पानतावणे स्पष्ट करतात.

' अस्मितादर्श ' डॉ. पानतावणे यांनी स्वतंत्रपणे सुरू केले ' अस्मितादर्श ' म्हणजे अस्मितेचा